शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नागार्जुन की कविताओं में लोक संस्कृति

आराधना (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

नागार्जुन (तरौनी, दरभंगा) समकालीन कवि है। इनकी रचना प्रक्रिया का ताना-बाना सामाजिक विसंगति , राजनैतिक विद्रूपता, धार्मिक उन्माद, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के साथ गँवई लोकभाषा में बुना गया है। नागार्जुन युगचेता एवं लोकचेता कवि है। लोकचेता कवि होने के कारण ही इनकी कविताओं का सृजन ग्रामीण संस्कृति एवं ग्रामीण सभ्यता से अनुरंजित है। प्रस्तुत शोध पत्र में नागार्जुन की कविताओं में लोक संस्कृति पर विचार किया गया है

काव्य में लोक संस्कृति

लोकधर्मी नागार्जुन की की कविताओं में आम जनजीवन की धडकन व्याप्त है। उनके 'युगधारा', 'भस्मांकुर', सतरंगे पंखों वाली' आदि संग्रह की कविताएँ ग्रामीण जनजीवन , परिवेश, संस्कृति ग्रामीण यथार्थ चेतना का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। नागार्जुन की कविता लोकयसनी में पगी होने के कारण लोक की घोषणा करती है-

"दिल ने कहा- दलित माँओं के / बच्चे अब बागी होंगे।"1

इसका यह प्रमाण है, कि नागार्जुन को समाज के हाशिए पर रहने वाली समाज की गहरी चिन्ता एवं बौखलाहट है। यही बौखलाहट 'सिन्दूर तिलंकित भाल' एवं 'लाल भवानी' कविता लोगों की जबान पर मुहावरे की बानगी चढ़ी हुई है।

"खेत हमारे , भूमि हमारी , सारा दे श हमारा है / जिनका ज़ागर उनकी धरती! यही एक बस नारा है/ होशियार, कुछ न दूर लाल सवेरा आने में / प्रकट हुई है लाल भवानी सुना है कि तेलगांने में।"2

हिन्दी काव्य साहित्य में नागार्जुन का प्रवे श एक क्रांतिकारी कवि के रूप में होता है। वे सच्चे अर्थों में सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते हैं। उनका सम्पूर्ण प्रगतिवादी काव्य जीवन के यथार्थ पर आधारित है। नागार्जुन ने कल्पना के धरातल पर हटकर प्रगतिवाद को अपनाकर जीवन के यथार्थ से अपना रिश्ता जोड़ा और निरन्तर अभावों एवं कठिनाइयों का सामना करते हुए समाज के दुःखी एवं अभावग्रस्त लोगों के जीवन को सुधारने के लिए प्रयास करते रहे। इस संदर्भ में डॉ. विशम्भर मानव का कहना है- "व्यक्तिगत दुःख पर न रुककर वे बार-बार व्यापक दुःख पर प्रकाश डालते हैं और यह सच्चे कवि की पहचान है। अतः धरती जनता और श्रम के गीत गाने वाले इस युग के संवेदन शील कवियों में नागार्जुन का नाम सदैव अमर रहेगा।"3 उन्होंने अपने काव्य में सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों एवं स्तरों को उनके यथार्थ रूप में चित्रित किया है। उनकी दृष्टि व्यापक एवं भावनाएँ उदात्त हैं। जहाँ उनका अपनी मातृभूमि, मिथिला के प्रति अटूट प्रेम है ,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वहाँ उनकी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय लोक-कल्याणकारी भावनाएँ भी उनके काव्य में स्थान-स्थान पर देखी जा सकती है।"

तीखा व्यंग्य उनके काव्य का वैशिष्टय है। उनके पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के प्रति किये गये व्यंग्य ही नहीं , पर सामाजिक रुढियों के प्रति किए गये व्यंग्य भी बड़े तीखे एवं हृदयस्पर्शी हैं।

"जमींदार हैं साहूकार हैं बनिया हैं व्यापारी हैं / अन्दर अन्दर विकट कसाई बाहर खद्दरधारी हैं/ सब घुसे आये भर पड़ा है भारत माता का मन्दिर/ एक बार जो , फिसलो अगुआ फिसल रहे हैं फिर-फिर।"4

इस प्रकार की व्यंग्यभरी पंक्तियाँ लिखने वाले भारत माता से प्यार करने वाले शोषितों के प्रति सहानुभूति रखने वाले थे बाबा नागार्जुन। उनकी मान्यता थी कि जब तक इस दे श में धनी और निर्धन का भेद व्याप्त रहेगा, तब तक इस समाज में न्याय नहीं हो सकता। समाज का नेतृत्व करने वाले स्वयं अपने आदर्शों से फिसलते रहेंगे।

"नागार्जुन एक ऐसे कवि हैं जो सच्चे अर्थों में आम-आदमी के कवि हैं। जिस प्रकार प्रेमचंद आम आदमी के लेखक हैं, उसी प्रकार नागार्जुन कवि हैं। उन दोनों के साहित्य में भोगा हुआ यथार्थ चित्रित हुआ है। "5 नागार्जुन दे श जनता तथा धरती के कवि है। दे श, जनता तथा धरती उनके यहाँ अमूर्त न होकर एकदम सगुण साकार है, अपने समूचेपन में, अपनी वास्तविकता में। देश और दे श की जनता , देश और दे श की धरती , उनके लिए आषाएँ-आकांक्षाएँ , उनके स्वप्न तथा संघर्ष सबको अपनी अभिव्यक्ति का विषय बनाया। नगर तथा गाँव सब उनकी दृष्टि की परिधि में रहे हैं और सबको उनके सामाजिक जीवन के संगति में भरपूर देखा, भोगा और जिया है। संघर्षरत साधारण जनता के प्रति वे सम्पूर्ण मन, वचन तथा कर्म से समर्पित रहे हैं। साधारण जन की व्यथा को, धरती माता के कष्ट को तथा अपने देश की छाती पर अंकित दंगों को उन्होंने बार-बार आकुल होते हुए चूमा , सहलाया और पुचकारा है।

गरीबों के दुःखदर्द को व्यक्त करने में उनसे बढ़कर कोई नहीं है। मानव मात्र में जो स्थापित होता है , जो य श प्राप्त करता है , दुनिया उसे प्रणाम करती है। यह स्वाभाविक भी है , लेकिन जो बहुत कोशिश करके भी स्थापित नहीं हो पाता, उसे प्रणाम करने वाले कम ही मिलते हैं। लोगों को नागार्जुन प्रणाम करना चाहते है-

"जो नहीं हो सके पूर्ण काम / मैं उनको करता हूँ प्रणाम!/ एकाकी और अकिंचन हो/ जो भू-परिक्रमा को निकले/ हो गए पंगु , प्रति-पद जिनके/ इतने अदृष्ट के दांव चले।/उनको प्रणाम।"6

जिनकी इच्छाओं, आकांक्षाओं को जिनके साहस दृढ़ निश्चय को जिनकी उग्र साधना , तपस्या को कभी समाज ने तो कभी नियति ने चूर-चूर कर दिया, उन्हें कवि प्रणाम करना चाहते हैं-

"जिनकी सेवाएँ अतुलनीय / पर विज्ञापन से रहे दूर/ प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके / कर दिए मनोरथ चूर-चूर।/ उनको प्रणाम।"7

चाहे मानव, चाहे परिस्थिति चाहे नियति उनके असफल होने का जो भी कारण हो , उन्हें मैं प्रणाम करता हूँ , ऐसा कवि का कहना है।

नागार्जुन ने समाज की आर्थिक खस्ता हालत का चित्रण अधिक किया है। निम्न वर्ग की हालत तब और खराब हो जाती है, जब अकाल पड़ता है। 'अकाल और उसके बाद' कविता में इस प्रकार का चित्र प्रस्तुत है-

"कई दिनों तक चूल्हा रोया , चक्की रही उदास / कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास / कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गस्त/ कई दिनों तक चूहों की हालत भी रही शिकस्त।"8

इस प्रकार अकाल पड़ने का चित्रण है तो उसके बाद के चित्रण में-

"दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद/ धुआँ उठा आंगन के उपर कई दिनों के बाद / चमक उठी घरभर की आँखें कई दिनों के बाद।"9

कई दिनों के बाद घर में अनाज आने से घर-भर की आँखें चमकती है। कौए द्वारा पंखों को खुजलाने का, खुशी व्यक्त करने का चित्रण है। यह सब आम आदमी के घर की स्थितियाँ हैं। अकाल में भी उच्च वर्ग की स्थितियों में कोई अन्तर नहीं आता है।

गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी एवं अभावग्रस्त जीवन जीने वाले गरीबों की स्थिति देखकर नागार्जुन जी का हृदय व्याकुल हो उठता है-

"देश हमारा भूखा-नंगा घायल है बेकारी से / मिले न रोजी-रोटी भटके दर-दर बने भिखारी से / स्वाभिमान सम्मान कहा है , होली है इन्सान की।"10

'अन्न पचीसी' कविता में कहा है-

"गोदामों में अन्न कैद है, पेट-पेट है खाली/ भूख-पिशाचिन बजा रही है द्वार-द्वारा थाली/ दो चाहे हिंसा की देवी को गाली पर गाली / बलि पशुओं की ले रही है खप्पर लेकर काली / गोदामों में अन्न कैद है, पेट-पेट हैं खाली।"11

इस प्रकार का चित्रण दिल दहला देने वाला हैं रोजी-रोटी के भूखे नंगे इंसान का चित्रण है जिसे अपमानित जीवन जीना पड़ता है यह उसकी मजबूरी है।

नागार्जुन की एक छोटी-सी काव्य रचना है 'प्रेत का बयान'। इसके माध्यम से उन्होंने व्यंग्यपूर्ण शैली में एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित किया है जो अर्थाभाव के कारण पेचिष की बीमारी का उपचार न करा सका और मर गया। उस व्यक्ति का प्रेत यमराज के न्यायालय में उपस्थित होता है , यमराज उससे मरने का कारण पूछते हैं-

"ओ रे प्रेत / कड़कर बोल नरके के स्वामी यमराज,/ सच-सच बतला/ कैसे मरा तू ?/ भूख/ से? अकाल से?

वह उत्तर देती है-

सुनिए महाराज/ तनिक भी पीर नहीं / सरलता पूर्वक निकले थे प्राण/ सह न सकी आँत पेचि श का हमला।"12

नागार्जुन एक ऐसे कवि है जो चाहे जो शिल्प लेकर चाहे जिस ढंग से हो प्रेत के मुँह से क्यों न हो समाज की हालत बयान करने का उस पर व्यंग्य करके बुराई सामने लाने की कोशिश करते हैं।

कवि नागार्जुन ने गाँवों के दयनीय जीवन का चित्रण भी अपनी रचनाओं में किया है-

"मल्लाहों के नंग-धड़ंग छोकरे / दो दो पैर / हाथ दो दो / प्रवाह में खिसकती रेत की ले रहे हैं छ/टोह/ बहुधा अवतरित चतुर्भुज नारायण ओह खोज रहे पानी में जाने कौस्तुभ मणि।"13

इसमें मल्लाहों के जीवन का चित्रण किया है। हमारा वर्तमान समाज दो वर्गों में विभाजित है- शोषक वर्ग और शोषित वर्ग। दोनों वर्गों के जीवन में पूर्व-पश्चिम-सा अन्तर है।

"उस तरफ संसार की रंगीनियाँ / इस तरफ है सैकड़ों गमगीनियाँ/ आ रही झनकार पायल की वहाँ/ और दिल पर ठोकरे लाखों यहाँ। / जागती वीणा वहाँ संगीत ले / बैठ जाता दिल यहाँ पर तीस दे।

जी रहे हैं जिन्दगी का स्वाद खोकर
काट रहे हैं जिन्दगी का भार ढोकर।"14

किसान और मजदूर समाज जीवन के मूलाधार है। इन दोनों के श्रम पर ही यह संसार जीवित और सभ्य बना हुआ है।

नागार्जुन सही अर्थों में भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम लोकप्रिय कवि हैं। उनकी कविताओं की लोकप्रियता का तो कहना ही क्या। बाबा उन बिरले कवियों में से है जो एक साथ कवि सम्मेलन के मंचों पर भी तालियाँ बटोरते रहे और गम्भीर आलोचकों से भी समाद्धृत होते रहे। इस बारे में खुद उन्हीं की जुबानी एक दिलचस्प उद्धरण है-

"कवि सम्मेलनों में बहुत जमते हैं हम। समझ गए ना ? बहुत विकट काम है कवि-सम्मेलनों में कविता सुनाना। बड़ो-बड़ों को, तुम्हारा क्या कहते हैं, हूट कर दिया जाता है। हम कभी हूट नहीं हुए। हर तरह का माल रहता है हमारे पास। यह नहीं जमेगा, वह जमेगा। काका-मामा सबकी छुट्टी कर देते हैं।"

बाबा नागार्जुन ने अपनी कविताओं का भाव धरातल सदा सहज और यथार्थ रखा , वह यथार्थ जिससे समाज का आम आदमी रोज जूझता है। बाबा को अपनी बात कहने के लिए कभी आड़ की जरूरत नहीं पड़ी और उन्होंने जो कुछ भी कहा उसका संदर्भ सीधे-सीधे वर्तमान से लिया है। नागार्जुन के काव्य का महत्व एवं विशेषताओं का उल्लेख करते हुए प्रकाशचन्द्र कहते हैं- "नागार्जुन जी का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। प्रेमचंद जैसा भारतीय कृषक, मजदूर वर्ग के प्रति आत्मीयता, निराला जैसा फक्कड़पन तथा अनुचित बातों पर कबीर जैसे फटकार सबका मिला-जुला रूप ही नागार्जुन के व्यक्तित्व का आधार है।"15

निष्कर्ष

नागार्जुन की कविताएँ अपने समय में समग्र परिदृश्य का जीवंत एवं प्रामाणिक दस्तावेज है। उनकी कृतियों में दे श-प्रेम, मानवता, विश्वबंधुत्व तथा जीवन/जीव मात्र के प्रति प्रेम के भाव सर्वत्र व्याप्त हैं। उदय प्रका श ने सही संकेत किया है कि बाबा नागार्जुन की रचनाओं के प्रमाणों से अपने देश और समाज के कई दशकों के इतिहास का पुन:लेखन कर सकते हैं। "16 नागार्जुन के काव्य में युग-युग से शोषित मानवों , कृषकों, श्रमिकों एवं अन्य अर्थपीड़ितों की वेदना को मुखरता मिली हैं इसलिए साहित्य जगत में उन्हें सम्मानपूर्वक याद किया जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. युगधारा, नागार्जुन, पृ.35
2. युगधारा, लाल भवानी, नागार्जुन, पृ.48
3. हिन्दी के प्रतिनिधि कवि, डॉ.. विजय प्रकाश मिश्र, पृ.256
4. हिन्दी के प्रतिनिधि कवि , डॉ.विजय प्रकाश मिश्र, पृ.257-258
5. 'कृतिका- अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, दिसम्बर 2015, सम्पादक- वीरेन्द्र सिंह यादव पृ.139
6. कविता की जमीन, डॉ.चन्द्रकांत पाटिल, पृ.26,29
7. कविता की जमीन, डॉ.चन्द्रकांत पाटिल, पृ.26,29
8. कविता की जमीन, डॉ.चन्द्रकांत पाटिल, पृ.35
9. कविता की जमीन, डॉ.चन्द्रकांत पाटिल, पृ.35
10. हिन्दी के प्रतिनिधि कवि , डॉ.विजय कुमार मिश्र, पृ.259
11. 'नागार्जुन चुनी हुई रचनाएँ, 'अन्न पचीसी पृ.205
12. 'युगधारा, प्रेरत का बयान, नागार्जुन, पृ.42
13. सतरंगे पंखो वाली, देना ओ गंगा मैया , नागार्जुन, पृ.19
14. 'नागार्जुन चुनी हुई रचनाएँ, 'मजदूर, पृ.240
15. हिन्दी के प्रतिनिधि कवि , डॉ.विजय कुमार मिश्र, पृ.266
16. ब्लॉग